Quadrant II – Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 103

Paper Title: Hindi Sahitya ka Aadikaal Aur Madyakaal: Parichayatmak Adhyayan

Unit: I

Module Name: आदिकालीन राजनीतिक परिवेश

Module No: 01

Name of the Presenter: Dr. Vaishali Sanjay Naik

आदिकालीन राजनीतिक परिवेश

साहित्य के निर्माण में समकालीन परिस्थितियों का व्यापक योगदान होता हैं । आदिकालीन साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है। प्राचीन कास से लेकर आधुनिक काल तक के परिवेश ने इतिहास के माध्यम से कुछ न कुछ सीखने के लिए प्रोत्साहित किया है । इतिहास की वही सीख हमें भविष्य का रास्ता दिखाने का काम करती हैं। इसलिए घटित घटनाओं का इतिहास महत्वपूर्ण बन जाता है । साहित्य के इतिहास में घटना और मानव के क्रियाओं के स्थान पर साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया जाता हैं । युगबोध को समझना है तो काल विभाजन की ओर ध्यान देना आवश्यक हैं । हिंदी साहित्य के अंतर्गत काल विभाजन की समय सीमा तय करना काफ़ी मुश्किल हैं। हिंदी साहित्य के कालविभाजन को जानना है तो मोटे रूप से हिंदी साहित्य के कालों का विभाजन तीन वर्गों में किया गया हैं आधुनिक ,मध्यकाल ,आदिकाल - काल। इस पाठ्यक्रम में प्रमुख रूप से आदिकाल और मध्यकाल के साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन किया जाता है । अतः आदिकाल का समय काल सं १०५० से १३७५ से .ई 993 सन्) 1318 ईजैन काव्य ,नाथ काव्य ,तक माना गया है जिसका विभाजन सिद्ध काव्य (. तथा रासो काव्य के तहत किया गयाहैं। मध्यकाल का विभाजन प्रमुखता दो वर्गों

में मिलता हैंजिसके तहत निगुर्ण काव्य जिसे ज्ञानाश्रयी शाखा और - भक्तिकाल - सगुण काव्य जिसे प्रेमाश्रयी शाखा कहते हैं। इसी निगुर्ण शाखा से संत काव्य तथा सूफी काव्य का रूप मिलता है और सगुण काव्य के माध्यम से राम काव्य तथा कृष्ण काव्य का परिचय होता हैं । इस काल के नाम को लेकर काफी विवाद मिलते हैंआचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार यह सारे -आदिकाल -जैसे , साहित्य का आरंभ का काल हैं तथा इस काल को उन्होंने आदिकाल नाम दिया। आचार्य रामचँद्र शुक्ल जी ने इसी काल को वीरगाथाकाल नाम दिया। यह नाम उन्होंने उन बारह ग्रँथों के आधार पर दिया जिसमें आश्रयदाता राजाओं सामंतों/के प्रशंसापरक गाथाएं प्राप्त होती हैं । इसीको डॉरामकुमार वर्माजी ने चारणकाल और . संधिकाल नाम दिया । वही महापंडित राहुल साकृत्यायन जी सिद्ध सामंत युग कहते है औरआचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदीजी जिसे बीजवपन काल नाम देते है । किसी भी काल को समझने के लिए उस समय के परिवेश को समझना आवश्यक है । इस दृष्टि से आदिकाल की राजनीतिक परिस्थितियों पर एक नजर डालते हैं। आदिकाल का राजनीतिक दौर बड़ा उथलपुथल का काल साबित हुआ है । इस स-मय पूरे देश में संघर्ष का वातावरण बना रहा । आदिकाल की राजनीतिक स्थितियाँ हर्षवर्धन के पतन से आरंभ होती हैं । ईसा की - वीं78वीं शती से लेकर वीं शताब्दी की 12 राजनीतिक घटना चक्र ने हिंदी साहित्य को भाषा और भाव दोनों तरह से प्रभावित किया है । सन् में हर्षव 647र्धन की मृत्यु के साथ भारत की केंद्रिय सत्ता लडखड़ा गयी । उसके शासन काल में देश सुख ,संपन्न था। देश का जीवन कल्याणकारी - वैभवपूर्ण था । लेकिन उसकी मृत्यु को उपरांत भारत की शक्ति छिन्नभिन्न हो - छोटे राजवंशों में बँट गयी । पूर्वी भार-गयी और राजसत्ता अनेक छोटेत में पालवंश , महाराष्ट्र में राष्ट्रकुट राजाओं का आपसी संघर्ष तथा ,प्रतिहार ,राजस्थान में गुर्जर राजसत्ता का विखंडन देख सकते है। उसीप्रकार मध्यदेश आठ केंद्रों में विभाजित हो अजमेर में शाकंभरी के -दिल्ली ,कन्नोज में प्रतिहारी ,गया। कश्मीर में कारकोट चौहानवंशीबुंदेलखंड में चंदेल तथा गुजरात में ,ग्वालियर ,मालवा में परमार , सोलंकीवंश का राज्य स्थापित हुए।भारत के विभिन्न राजसत्ताओं जैसे काशी के गहड़वाल वंशी, चेरी और कलचूरियों, दक्षिण में चालुक्य आदि का आपसी संघर्ष को देख सकते है । ये शासक आपस में लड़कर अपनी शक्ति को नष्ट करने लगे । इनमें विभिन्न गोत्रिय, क्षेत्रिय शासकों का शासन था लेकिन उनमें परस्पर सद्भाव,

और एकता का अभाव देखने को मिलता हैं। भारत के अंतिम सम्राट चौहानवंशीय पृथ्वीराज चौहान एक प्रभावशाली शासक रहा है । लेकिन आपसी झगड़ों में भारतीय शक्ति टूट-फूट गयी और पृथ्वीराज की मृत्यु के बाद तो रही- सही आशा भी विलीन हो गयी । एक प्रकार से यह पूरे देश की स्वाधीनता और स्वतंत्रता की पराजय थी।

7वीं से 12वीं शती तक के पूरे भारतीय इतिहास को राजपूत काल भी कहा जाता है, क्योंकि सारे राजा क्षत्रिय थे। इसी कारण कुछ इतिहासकारों ने इसे सामंती युग भी कहा है । वैसे देखा जाए तो हर्षवर्धन के समय से ही भारत पर विदेशी आक्रमण शुरू हो चुके थे। 7वीं शती से सीमाओं पर आक्रमण होने लगे। साम्राज्य विस्तार और इस्लाम धर्म का प्रचार का उद्देश्य लेकर ही इन्होंने भारत में प्रवेश किया था। भारत का पहला संपर्क अरबों से हुआ। 7वीं-8वीं शती में सिंधू प्रदेशों पर अरब आक्रमण का उल्लेख इतिहास में मिलता हैं । सन् 710-11 में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में आक्रमण किया गया। उस वक्त सिंध पर ब्राह्मण राजा दाहिर का राज्य था। राजा दाहिर और उसके पुत्र इस युध्द में हार गये । जिसका कारण था वहाँ के जाटों का राजा के व्यवहार से असंतुष्टी। इस प्रकार वैयक्तिक स्वार्थ के कारण देश विदेशियों के हाथ चला गया । उसने असंक्य नर-नारियों को मौत के घाट उतारा, मंदिरों के नष्ट किया और अमाप संपत्ति लुटकर चले गये। 300 वर्षों के बाद तुर्कों ने भारत पर आक्रमण किया। ये तुर्क अरबों से भी खतरनाक साबित हुए। भारत में स्थायी रूप से रहना और इस्लाम का प्रचार इनका प्रमुख उद्देश्य रहा । सुबुत्तगीन पहला तुर्क था जिसने भारत पर आक्रमण किया । उसके बाद उसके बेटे महमूद गजनवी के आक्रमण सबसे भयंकर साबित हुए। 10वीं शताब्दी में गजनी राज्य महमूद गजनी के हाथ आया तो उसने भारत पर 1001 ईस्वीं में सफल आक्रमण किया । लगभग 17 बार आक्रमण करके 1008 ईस्वीं में मुर्तिवाद के विरुध्द नगरकोट पर आक्रमण किया। उसका सबसे चर्चित आक्रमण 1024 ईस्वीं था जिसमें सौराष्ट्र के सोमनाथ मंदिर को लुटा और हजारों नागरिकों को मौत के घाट उतारा। इस के अलावा उसने पंजाब, कांगडा, मथुरा, कन्नोज,ग्वालियर पर भी कब्जा किया। उस वक्त दक्षिण का चोल राजा राजेंद्र अपने राज्य का विस्तार करने में लगे रहे। इसी प्रकार 11वीं और 12वीं शताब्दी में दिल्ली में तोमर, अजमेर में चौहान और कन्नौज में गहड़वाल वंश

का शासन था। उसके उपरांत शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी के भारत पर ११७५ ई. से आक्रमण किया। गौरी कट्टर मुसलमान शासक था। उस वक्त दिल्ली के चौहानवंशीय शासक पृथ्वीराज चौहान विदेशी आक्रमण से पूर्ण रूप से सचेत नहीं थे । अतः ११९२ ई. में थानेश्वर के निकट तरायी के युद्ध में पराजित हुए तथा उसके साथ हिंदू शासन का भी अंत हुआ। आदिकालीन राजनीतिक क्षेत्र में इस पराजय के कारणों को अगर देखे तो पत्ता चलता है कि, उस वक्त भारत पर मंडलों का शासन था और ये शासक प्रायः स्थानिय हुआ करते थे । जनता भी इन्हीं शासकों का मुँह देखने लगी और संपूर्ण देश के हित की तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया । प्रांतीयता, स्थानियता की प्रबल भावना और संघ शक्ति का अभावों के कारण सैनिक शक्ति क्षीण होती चली गयी और राज्य बँटकर एकरूपता और संगठन को खो बैठा। दूसरा, देशभक्ति की व्यापक भावना उस काल में किसी में भी नहीं थी। स्वार्थ, आपसी फूट-कलह, विलासिता, जातिय मिथ्याभिमान आदि भी कई कारण थे । जिसके फलस्वरूप विदेशी मुसलमान आक्रमणकारियों के लिए यह स्थिति बड़ी अनुकूल साबित हुई और चौदाहवीं शताब्दी तक आते- आते पूरा उत्तर भारत विदेशियों के हाथों चल गया एक प्रकार से राजनीतिक दृष्टि से यह पतन का काल साबित हुआ।